पो. रजि. नं. जयपुर सिटी/011/2024-2026, आरएनआई रजि नं. 48910/91 fb/seemasandesh1951 seemasandesh1951@gmail.com 0141-2700113 ■जयपुर-श्रीगंगानगर (राज.) से एक साथ प्रकाशित ■ जोधपुर, कोटा, नागौर से प्रसारित

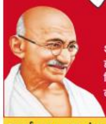

शुद्ध न्याय में शुद्ध दया होनी चाहिए, न्याय का विरोध करने वाली दया, दया नहीं बल्कि क्रूरता है। -महात्मा गांधी

1951 में स्थापित

सीमा सन्देश

ताकत किसान की, जवान की

संस्थापक स्व. श्री कमल नयन शर्मा

■वर्ष : 34 ■अंक : 123 ■मूल्य : रु. 2.00 ■पृष्ठ : 08 जयपुर, रविवार, 3 नवम्बर, 2024 ऑनलाइन पढ़े : epaper.seemasandesh.in

गोवर्धन पूजा कर महिलाओं... 7

कोविड के दौरान आयुर्वेद का लोहा पूरे विश्व ने माना : डॉ. पी सी पंचारिया

धन्वंतरि जयंती पर सीएसआईआर-सीरी में राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस मनाया गया

पिलानी (सीमा सन्देश सं)। आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के निदेर्शानुसार सीएसआईआर-सीरी, पिलानी में 29 अक्टूबर को 9वाँ राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस गरिमामयी ढंग से मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ पी सी पंचारिया, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी ने की। अपने अध्यक्षीय संबोधन में डॉ पंचारिया ने विश्व में आयुर्वेद के बढ़ते प्रभाव की चर्चा की। उन्होंने कोविड महामारी के दौरान भारतवासियों द्वारा उपयोग में लाई गई आयुर्वेदिक दवाओं एवं आयुर्वेद पर आधारित देसी नुस्खों के लाभों को रेखांकित किया।

उन्होंने कहा कि कोविड के दौरान इस चिकित्सा पद्धति का लोहा पूरे विश्व ने माना जिसके कारण उस महामारी में हमारे देश में कोविड से हुई मृत्यु दर पूरे विश्व में सबसे कम रही। डॉ पंचारिया ने बताया कि आज भी हमारे देश के परिवारों की रसोई में देसी नुस्खों के रूप में आयुर्वेद मौजूद है ।इस अवसर पर श्री जय शंकर शरण, प्रशासन नियंत्रक ने आयुर्वेद पर आधारित व्याख्यान दिया। 'दैनिक जीवन में आयुर्वेद की उपयोगिता एवं लाभ' विषयक अपने व्याख्यान में उन्होंने आयुष मंत्रालय द्वारा जारी ई आयुर्वेद-किट के प्रमुख बिंदुओं पर भी विस्तार से चर्चा की। अपने व्याख्यान के दौरान उन्होंने कहा कि गतवर्ष भारत सरकार के प्रयासों से विश्व के 112 देशों में आयुर्वेद दिवस के उपलक्ष्य में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस वर्ष भारत सरकार ने 150 देशों में ऐसे कार्यक्रमों एवं अन्य माध्यमों से हमारी इस चिकित्सा पद्धति के व्यापक प्रचार-प्रसार का लक्ष्य निर्धारित किया है ।कार्यक्रम का संचालन करते हुए मीडिया एवं जनसंपर्क अधिकारी रमेश बौरा, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी ने आयुर्वेद दिवस की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए बताया कि यह दिवस आयुर्वेद के जनक भगवान धन्वंतरि की जयंती (धनतेरस) के अवसर पर प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है। अंत में डॉ सुचंदन पाल, मुख्य वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि इस पद्धति के दुष्प्रभाव न होने के कारण यह दिन-प्रतिदिन लोकप्रिय हो रही है। उन्होंने उन्होंने आयुर्वेद के विरुद्ध हो रहे दुष्प्रचार से सावधान रहते हुए चिकित्सक की सलाह से ही उपचार लेने कर परामर्श दिया।